ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)15-19
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

अखिलेश कुमार मौर्य
शोधार्थी, हिंदी विभाग
एम. एम. एच. कॉलेज, ग़ाज़ियाबाद

Corresponding Author :
अखिलेश कुमार मौर्य
शोधार्थी, हिंदी विभाग
एम. एम. एच. कॉलेज, ग़ाज़ियाबाद

भोजपुरी लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन का चित्रण

विवाह के उपरांत स्त्री-पुरुष जिस धर्म का निर्माण करते हैं उसे दांपत्य जीवन कहते हैं। भारतीय समाज में पति-पत्नी का संबंध बहुत पवित्र माना जाता है। यहाँ पति-पत्नी का साथ इस जन्म तक नहीं, बल्कि सात जन्म तक निभाने की बात कही गई है। सुखी दंपत्ति जीवन का आधार प्रेम, विश्वास और समर्पण है। इसके अभाव में दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रह सकता है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर अब तक दांपत्य जीवन को आधार बनाकर बहुत सी रचनाएँ लिखी गई है। लोकगीतों का लोक-साहित्य में प्रमुख स्थान है। जनजीवन में प्रचुरता और व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वाभाविक है। विभिन्न विद्वानों ने लोकगीत को अपने तरीके से परिभाषित किया है। डॉ कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकगीत को छः श्रेणियों में विभक्त किया है[1]-

1. संस्कार संबंधी गीत
2. ऋतु संबंधी गीत
3. व्रत संबंधी गीत
4. देवता संबंधी गीत
5. जाति संबंधी गीत
6. श्रम संबंधी गीत

डॉ. श्याम परमार ने 'भारतीय लोक-साहित्य' में श्री भास्कर रामचंद भालेराव के मत का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा प्रतिपादित लोकगीतों के भेद का उल्लेख किया है। श्री भालेराव ने गीतों को चार श्रेणियों में विभक्त किया है[2]-

1. संस्कार विषयक गीत
2. माहवारी गीत
3. सामाजिक-ऐतिहासिक गीत
4. विविध

इनके अतिरिक्त भी लोकगीतों के विभिन्न भेद किया गया है। लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन का चित्रण प्रमुखता से किया गया है। इसमें गीतों में दाम्पत्य जीवन में

प्रेम, श्रृंगार, वियोग आदि का वर्णन दिखाई देता है। प्रेम सुखी जीवन जीने का आधार है अतः लोकगीतों में प्रेम का वर्णन दिखायी देता है। दाम्पत्य जीवन के लिए यह प्रेम और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है।

इनके अतिरिक्त भी लोकगीतों के विभिन्न भेद किया गया है। लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन का चित्रण प्रमुखता से किया गया है। इसमें गीतों में दाम्पत्य जीवन में प्रेम, श्रृंगार, वियोग आदि का वर्णन दिखाई देता है। प्रेम सुखी जीवन जीने का आधार है अतः लोकगीतों में प्रेम का वर्णन दिखायी देता है। दाम्पत्य जीवन के लिए यह प्रेम और भी ज्यादा जरूरी हो जाता है। पति-पत्नी के प्रेम का एक उदाहरण देखिए-

"पहिली इयारी रसोइया में लागे, हमें चौखट को चोट लागे।
इमें न इयरिया नोक लागे।
दूसरे इयारी वेलनवा पर लागे, हमे वेलनन को चोट लागे,
हमें न इयरिया।
तीसरी इयारी सेजरिया पर लागे, हमें फूलनन को चोट लागे
हमें न इयरिया"[3]।

अर्थात कोई स्त्री कहती है कि पति के साथ प्रथम मित्रता रसोई घर में भोजन कराते समय होती है परन्तु वहाँ की मित्रता चौखट से चोट लग जाने के कारण मुझे अच्छी नहीं लगती। दूसरी मित्रता रोटी बनाते समय बेलना पर होती है परन्तु बेलना से चोट लग जाने से मुझे वहाँ की मित्रता भी अच्छी नही लगती। तीसरी मित्रता पति से सेज के ऊपर होती है। परन्तु उस पर फूल बिछे होने के कारण मुझे चोट लगती है। अतः मुझे सेज पर की मित्रता भी पसन्द नहीं है। इस गीत में मित्रता के क्रम में व्यतिक्रम दिखाई पडता है। पति- पत्नी में रूठना मनाना लगा रहता है। जब कभी पत्नी नाराज़ हो जाती है तो पति मना लेता है और जब पति नाराज़ जाता है तो पत्नी मना लेती है। एक पति अपने पत्नी से नाराज़ है और अन्न ग्रहण नहीं कर रहा है, पत्नी उसे मनाने की कोशिश कर रही है-

"सोने के थारी मे जेबना परोसलों, जेबना न जेवे मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर। आमावा में डाडी कोइलिया बोले, बनावा में बोले मोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर।
फफर गड आ गगाजल पानी, पियवा न पीये नोर।
पपिहरा काहे मचायो सोर"[4]।

अर्थात स्त्री कहती है कि सोने की थाली में मने भोजन परोसा परन्तु मेरा पति उसे नही खाता है। आम के वन में कोयल बोल रही है और वन मे मोर बोल रहा है। ऐ पपीहा! तुमने क्यो शोर मचा रक्खा है। लोटे में गगाजल भरा पड़ा है परन्तु मेरा पति उसे नही पीता है। ऐ पपीहा! तुमने इतना शोर क्यों मचाया है-क्यों इतने जोर से बोल रहे हो।

दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी में कभी-कभी किसी बात को लेकर कलह भी हो जाता है। ऐसे मौके पर पत्नी अपने पति को मायके जाने की धमकी देती है-

"संवलिया से हम से नाहीं वनी रे।
बोलाव सोनरा के गर्हाव ककना रे।
बोलाव दरजी के सियाव चोलिया रे।
बोलाव मलिया के गुलाव गजला रे।

बोलाव देवरा के लगाव वीडवा रे।

बोलाव ननदी के डॅड़िया फानाव रे।

हम जाइव नइहरवा आजु रे"[5]

अर्थात स्त्री कहती है कि पति से मुझसे नही पटता है। दरजी को बुला कर मै अपनी चोली सिलाऊँगी तथा सोनार को बुलाकर ककना वनवाऊँगी। संवलिया माली को बुलाकर माला तथा देवर को बुलाकर पान का वीडा बनाऊँगी। ननद को बुलाकर पालकी में बैठ जाऊँगी क्योंकि आज मैं अपने मायके जाऊँगी।

भोजपुरी क्षेत्र में रोजगार ना होने के कारण पति अक्सर कमाने परदेश चले जाते हैं। पति के प्रवास के दौरान पत्नी अकेली हो जाती है। वह अपने मन की बात किसी से नहीं कह पाती है। कभी घर मे सास-ससुर तो कभी ननद और देवर के द्वारा उसका शोषण भी किया जाता है। उसके पति के परदेश जाने के बाद उसको यह भी डर बना रहता है कि कहीं उसके पति दूसरी शादी ना कर ले और उसके लिए सौत ना ला दें। अक्सर पत्नी अपने पति को परदेश जाने से रोकती है। इस तरह के सभी दृश्यों का लोकगीतों में जीवंत चित्रण मिलता है। एक पति परदेश जाना चाहता है परन्तु उसकी पत्नी दरवाजा नहीं खोल रही है-

"रून-झुन खोलऽ ना केवड़िया,

हम बिदेसवा जइबो ना।"

"जो मोरे संइया तुहूं बिदेसवा जइब ना,

तूं बिदेसवा जइब ना।

हमरा भइया के बोला दऽ, हम नइहरवा जइबो ना।"

"जो मोरे धनिया तुंहू नइहरवा जइबू ना,

नइहरवा जइबू ना।

जाताना लागल बा रूपईया

ओतना देई के जइह ना।"

"जो मोरे सइयां तुहूं लेबऽ अब रूपइया,

तूं रूपइया लेबऽ ना।

जइसन बाबा घरवा रहनी,

ओइसन करिके दीहऽ ना।"

"रून-झुन खोलऽ ना केवड़िया,

हम बिदेसवा जइबो ना।"[6]

स्त्री अपने पति को कलकत्ता जाने से रोकती है क्योंकि कलकत्ता का जादू बड़ा प्रसिद्ध है। पत्नी को डर है कि पति अगर कलकत्ता कमाने चले जाएंगे तो वहाँ पर दूसरी स्त्री उन्हें जादू से अपना गुलाम बना लेगी। उसे यह भी डर है कि कहीं पति उसे भूल न जाए या सौत ना ला दे। वो पति से कहती है-

"कलकत्ता तू जनि जा राजा, इमार दिल कइसे लागी।

ओहि कलकत्ता इलुबार्शन विटिया, वरफी खिलावे दिन राती।

हमारा दिल कइसे

ओहि कलकत्ता पनेहेरिन विटिया, बीरा चभावे दिन राती।
इमार दिल कइसे।
ओहि कलकत्ता वगालिन बिटिया, जादो चलावे दिन राती।
इमार दिल कइसे लागी"[7]।

अर्थात स्त्री अपने पति में कह रही है कि ऐ पति! तुम कलकत्ता मत जावो क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा दिल नहीं लगेगा। उस कलकत्ता में हलुवाई की लडकियाँ रहती है जो रात-दिन मिठाई बनाकर लोगों का मन मोह लेती है। उस कलकत्ते में पान बेचनेवाली की लडकियाँ रहती है जो पान खिला कर लोगो को अपने वश में कर लेती हैं। उस कलकत्ते में बंगालिनी की लडकियाँ रहती है जो जादू करके लोगों के मन को वशीभूत कर लेती है। अतएव ऐ पति! तुम कलकत्ते मत जाओ नहीं तो वे तुमको भी अपने वश में कर लेंगी।पति के परदेश जाने के बाद वह घर में अपने मायके के अतीत की स्मृतियों से मुक्त होती है तो पुनः पति की स्मृतियों में खो जाती है। और जब दोनों ही स्मृतियों से मुक्त होती हैं तो पुनः अकेलापन। ऐसे में वह अपने मायके से ही नहीं बल्कि प्रियतम से भी बात करना चाहती है। परंतु बात कैसे करेगी। उसके प्रियतम कहाँ होंगे? उसकी बातों को उन तक कौन पहुँचायेगा? छप्पर पर कौआ आया हुआ है। वही उसके दिल के हाल को उन तक पहुँचायेगा। आंगन में लगे पेड़ या छप्पर पर आने वाले ये पंक्षी ही उसके अकेलेपन के साथी होते हैं। वह अपने परदेसी पति की खबर लाने के लिए कागा को दूध भात खाने की लालच दे रही है-

"ननदि के अंगना चनन घन गछिया हो रामा।
ताहि चढ़ि बोलेला कागवा छुलच्छन हो रामा
देबऊ रे कागवा, दुधा भात दोनिया हो रामा।
खबर ना ला दे बलम परदेसिया हो रामा।"[8]

अर्थात् हे काग! मेरे परदेशी बालम की खबर ला दोगे तो तुम्हें दूध भात खिलाऊँगी। अरे! यह कागा क्या सुना रहा है? प्रियतम ने दूसरी स्त्री रख ली है! वह स्त्री मुझसे भी सुंदर है? मेरा इतना अपमान।

सावन के महीने में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें 'कजली' कहते हैं। इन गीतों का विषय वस्तु पति-पत्नी का प्रेम निरूपण रहता है। इसमें संयोग, वियोग और उलाहना का बड़ा ही सुंदर दृश्य उपस्थित रहता है। सावन का मौसम बहुत सुहावना होता है। नीले आकाश में बादल छाए रहते हैं। हवा चल रही है, बिजली चमक रही है और बारिश की बूंदे धरती पर गिर रही हैं। चारो तरह हरियाली निकल आई है। सावन के इस महीने में भोजपुरी प्रान्त में कजली गाने की परंपरा रही है। मिर्जापुर जिले की कजली बहुत प्रसिद्ध है। एक स्त्री अपने पति से किस तरह प्रेम चाहती है-

"सोने के थारी में जेवना परोसली, जेवना न जेवे।
राजावा लागल फूलन को तोसक, मुझको हवा खिला दो ना।
हवा खिला दो, सहर घुमा दो, राजवा वेसरि गीरे मधुवन में,
मुझको हवा खिला दो ना।
झूला झुला दो, सहर घुमा दो, राजावा बेसर गीरे मधुवन मे,
मुझको हवा खिला दो।"[9]

अर्थात कोई स्त्री कह रही है कि मैने सोने की थाली में अपने पति को भोजन दिया था परन्तु उसने उसे नही खाया। ऐ पति! सेज पर फूल बिछे हैं मुझे टहलाने के लिये ले चलो।

नशा किसी भी रिश्ते में दुःख का एक बड़ा कारण है। अगर दाम्पत्य जीवन में पति नशा सेवन करने वाला मिल जाये तो दाम्पत्य जीवन दुःखमय हो जाता है। पत्नी ऐसे पति से काफी परेशान हो जाती हैं क्योंकि वह घर का सारा सामान बेचकर नशा करने लगता है-

"मोर राजा छइला रे, लेइ बिजुल डहिया ठोकवें।
डहिया ठोकाई के भइले समतुला रे।
बेचि बेचि लत्ता, खाये लगले भांगि रे।
सुरती अ तमाखू खाई,, भइले मझमेला रे
खाये लगिले भंगिले पान रे, मोर राजा छइला रे।"[10]

अर्थात मेरा पति छैला निकल गया। वह खाये-पीये मस्त रहता है। घर का सामान बेचकर, भांग, तमाखु, पान खा जाता है। क्या कहूं, मैं तो उससे तंग आ गई।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भोजपुरी लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन का वर्णन बखूबी दिखाई देता है। पत्नी का पति से प्रेम निवेदन का सुंदर चित्रण भोजपुरी लोकगीतों में उपस्थित है। पति के परदेश चले जाने पर पत्नी के वियोग को बहुत ही मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा पति के द्वारा लाई गई सौत, उलाहना, नशेबाज पति आदि का भी वर्णन दिखाई देता है। आधुनिकता के दौर में शहरी समाज में लोकगीतों का प्रचलन भले ही कम हो परंतु गाँव में रहने वाली एक बड़ी आबादी आज भी इसे अपना मनोरंजन का साधन मानती है और इसका संरक्षण भी करती है जिससे ये आगे पीढ़ी तक सुरक्षित रह सकें।

संदर्भ सूची :-

1. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक-साहित्य की भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2020, पृष्ठ 58
2. श्याम परमार, भारतीय लोक-साहित्य,पृष्ठ 64-65
3. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक-गीत, हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग, 2000, पृष्ठ 394
4. वही, पृष्ठ 395
5. वही, पृष्ठ 375
6. कृष्णदेव उपाध्याय, हिंदी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1990, पृष्ठ 73-74
7. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक-गीत, हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग, 2000, पृष्ठ 390-391
8. शाहिद अमीन(सं), ए कानसाइज़ एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ नॉर्थ इंडियन पीजेंट लाइफ, मनोहर पब्लिकेशन, दिल्ली, 2005, 276
9. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक-गीत, हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग, 2000, पृष्ठ 423-424
10. अर्जुनदास केसरी, करमा, लोकरुचि प्रकाशन, रॉबर्ट्सगंज, 1981, पृष्ठ 81-82

•